अध्यापनकी कला

''हमारे शहरमे अबतक कई लोगोंने फोटोग्राफीके वर्कशॉप्स लिये, मगर आज मेरे सारे डाऊट्स क्लिअर होगये!''

ये थी हमारे वर्कशॉपमे हिस्सा लेनेवाले एक छात्रकी स्वाभाविक रिॲक्शन. ऐसे तो हमारे कोर्सेस करनेवाले लोगोंकी यही भावना होती है. अध्यापनकी कला हर किसीके पास नही होती. कोई फोटोग्राफर कितनाभी मशहूर क्यों न हो, शायद वो अच्छे ढंगसे अध्यापन नही कर पायेगा. क्या कोई अच्छा परफोर्मर एक अच्छा अध्यापकभी हो सकता है? ये बात कोई आवश्यक नही की कोई अच्छा परफोर्मर एक अच्छा अध्यापकभी हो. जैसेकी हम जानते है कपिल देव, गावसकर तथा सचिन तेंडुलकर जैसे खिलाडीयोंको प्रशिक्षित करनेवाले गुरू तो कभी टेस्ट क्रिकेटभी नही खेले थे. व्हॅटमोर जैसे प्रशिक्षक खिलाडीके रूपमे मशहूर नही थे लेकिन उन्होने श्रीलंका टीमको वर्ल्डकप जितलाया, तो ग्रेग चैपेल जो मशहूर खिलाडी थे मगर उनके अध्यापनका कुछभी फायदा अपनी टीमको नही हुआ.

जीवनके हर क्षेत्रमे ये लागू है और फोटोग्राफी कोई अपवाद नही है.

हमारे कोर्स डायरेक्टर और प्रमुख अध्यापक प्रो. मनोहर देसाईजीका अध्यापन का ढंग छात्रोंको काफी प्रभावित करता है. वे एक अच्छे अध्यापकके रूपमे गये २४ साल पुरे देशमे प्रसिध्द है. प्रो्. देसाई अपने अध्यापनके दौरान सिर्फ फोटोग्राफी और उसकी तकनीकके बारेमेही बाते करते है, क्योंकी वे एक ऐसे गुरू है जिनको पता है की छात्र केवल फोटोग्राफी और उसकी तकनीक सिखनेकेलियेही अपना समय और पैसा अदा करते है. हर छात्रपर उनका व्यक्तिगत ध्यान रहता है और छात्रके हर तकनीकी सवालोंको सही उत्तर देके उन्हे खूश रखते है. फोटोग्राफीके और कई वर्कशॉप्समे (जहां फी भी कई गुना जादा होती है) छात्रोंको गुरूकी अपनी अप्रासंगिक कथाये जबरदस्ती सुननी पडती है और अपना किमती समय बरबाद करना पडता है.

हमारा वर्कशॉप केवल ४ दिनोंका होता है क्योंकी उसमे सिर्फ फोटोग्राफी तकनीककोही महत्व दिया जाता है. हमारे भूतपूर्व छात्रोंसे इसकी प्रतिपुष्टी आप अवश्य ले सकते है. भूतपूर्व छात्रोंकी, जिन्होंने अभी कई दिन या महिने पहले हमारा वर्कशाप किया है, उनकी एक सूची उनके टेलिफोन नंबरके साथ इसी वेबसाईटपर उपलब्ध है. अन्य वर्कशाप्सकी तुलनामे हमारे वर्कशापमे कम मूल्यमे आप जादा कुछ हासिल कर सकते है क्योंकी बिजनेस हमारी प्राथमिकता नही है.